'छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में अभिव्यक्त राम का स्वरूप एवं विकास'

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में कला संकायान्तर्गत
हिन्दी विषय में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध
कार्य की रूपरेखा
2016

निर्देशक
डॉ. (श्रीमती) श्रीदेवी चौबे
प्राध्यापक विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
बी.सी.एस. शास. स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.)

Dr. Shree Devi Choubey
Professor & H.O.D. Hindi
Govt. P.G. College Dhamtari

शोधार्थी
ऋचा शुक्ल
बी.सी.एस. शास. स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.)

शोध अध्ययन केन्द्र हिन्दी
बी.सी.एस. शास. स्ना. महा. धमतरी (छ.ग.)

PRINCIPAL
GOVT. P. G. COLLEGE
DHAMTARI (C.G.)

शोध केन्द्र
बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
धमतरी (छ.ग.)

प्रस्तावना

'सिया राम मय सब जग जानी'

जगत जननी माँ सीता के प्राणवल्लभ राम समस्त जग में जानी जाती है, राम – मोहन है। राम – सुंदर है, राम; मर्यादा पुरुष है। आदर्श युग पुरुष आदर्श राज्य के संस्थापक मर्यादा पुरुषोत्तम राम – राजा दशरथ और छत्तीसगढ़ की पावन धरा में जन्मी देवी कौशल्या के पुत्र थे। कैकई नंदन भरत और सुमित्रानंदन द्वय लक्ष्मण और शत्रुघन इनके भाई थे। गुरु वशिष्ठ इनके शिक्षा संस्कार प्रदाता थे। राम हर पग में मर्यादा का पालन करते थे, इसलिए उसे मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया। जिस प्रकार महापुराण भागवत को श्रीमद्भागवत कहा जाता है अन्य किसी ग्रंथ, पुराण को नहीं उसी तरह आज तक राम को छोड़ अन्य किसी को मर्यादा पुरुष नहीं कहा गया, किसी के साथ मर्यादा का विशेषण नहीं लिखा गया। श्रीराम सत्यव्रती, न्यायप्रिय, रुप एवं गुण में भी अद्वितीय थे इसलिए तब और अब भी वे जनप्रिय है।

राम की संक्षिप्त यात्रा चार पंक्तियों में कही गयी –

आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वामृगा कांचनम,
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम्।
बालि निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनम्,
पश्चादरावण कुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम्।

ऋषि विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राजा दशरथ से मांग राम–लखन को ले जाते है। यहीं से राम–लक्ष्मण की यात्रा या कहे यश यात्रा शुरु होती है। वहीं भगवान राम ताड़का सुबाहु को मारकर यज्ञ निर्विध्न पूर्ण कराते हैं। आगे महामुनि विश्वमित्र के साथ जनकपुर की यात्रा में चलते हैं। मार्ग में ऋषि पत्नी अहिल्या का उद्धार करते हैं। राम की यात्रा में राम से पहले उसका यश पहुँचने लगता है। राम जनकपुर नहीं पहुँचे मगर अहिल्या उद्धार की बात जनकपुर पहुँच गयी। जनकपुर में राजा जनकविदेह के धनुष यज्ञ देखने जाते है। गुरु की आदेश मान राम शिव धनुष तोड़ते है और जगत जननी सीता से विवाह करते है।

राजा दशरथ राम को युवराज बनाना चाहते है पर मंथरा–कैकयी की युक्ति ने उन्हें 14 वर्ष का वनवास दिलाया। माँ–बाप की आज्ञा मान राम–सीता–लक्ष्मण वन गमन करते हैं। चित्रकूट में भरत उन्हें वापस अयोध्या आने का अनुनय–विनय करते है। राम–भरत का यह संबंध अद्भुत है। राम वन जाना चाहता है, भरत राजपाठ उन्हें देना

चाहता है, पर सत्यनिष्ठ राम रघुवंश की दुहाई दे, पिता की आज्ञा को प्राण जाय पर वचन न जाए की पुष्टि करते भरत को ही मना लेते है और लोक के लिए वन की ओर आगे बढ़ते है। आगे ऋषियों से मुलाकात, अस्थि को देख, निशाचारों, राक्षसों का विनाश का प्रण। शूर्पणखा का नाक काटना, खरदूषण, तिसेरा का वध। रावण द्वारा सीता हरण, जटायु उद्धार, शबरी का आतिथ्य। हनुमान भेंट, राम–सुग्रीव मैत्री, बाली वध, अंगद को युवराज।

सुंदरकाण्ड़ में हनुमान–विभीषण भेंट सीतादर्शन, लंका दहन, राम का रावण से युद्ध हेतु प्रस्थान, सेतुबंध निर्माण, रामेश्वर स्थापना, गिलहरी योगदान राम–विभीषण मैत्री। राम रावण युद्ध, पुष्पक से अयोध्या वापसी, राज्याभिषेक, राम राज्य। आज भी हमारे, देश भारत में आदर्श राज की कल्पना कर कहा जाता है, राम राज्य की स्थापना करनी है।

रामायण की कथा और रामनाम सप्ताह आज छत्तीसगढ़ के हर गांव का अनिवार्य अंग है, मानस पाठ और मिलने पर राम–राम, जय राम जी, कह कर अभिवादन पूरे देश में प्रचलित है। देश के सभी सम्प्रदायों, पंथों में राम मान्य है, पूज्य है, आदर्श है।

रामकथा, रामायण पाठ, रामायण मंडली, रामलीला देश ही नहीं विदेशों में भी रमा है। मॉरिशस देश तो राममय है। अनादिकाल से राम लोकमान्य है, लोक मंगल जन–मन में, रचा–बसा है। हृदय की धड़कन है, जमाई लेते ही राम–राम, सुबह उठते ही हरे राम, मिलन पर राम–राम बिछुड़न में राम नाम सत है। राम की भक्ति जन–मन में इस तरह रचा–बसा है कि, राम भक्ति की धारा घर–घर में प्रवाही है रचा–बसा है।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
रामचरितमानस/बाल./51/4
प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक।
रामचरितमानस/लंका/59

छत्तीसगढ़ में राम नाम के आगे और पीछे जुड़ा हुआ है । अनेक राग, वृक्षों, अनाजों, सब्जियों, तीर्थों, नगरों, नदियों, पर्वतों, पक्षियों, आदि के नाम में राम शब्द जुड़ा मिलता है। राम अंजीर (पाकड़/पाकड़ वृक्ष), रामकजरा (एक धान), रामकुन्तल/रामकली (एक रागिनी), रामगंगा (गंगा की एक सहायक नदी), रामगिरी, रामटेक, रामतरुणी (सेवंती या सफेद गुलाब), रामतरोई (एक सब्जी घिया/लौकी), रामदाना (व्रतों में खाया जाने वाला एक अनाज चौराई/चोया), रामबबूल, रामभोग (चांवल), रामरस (एक चिड़िया)। रामजाने–पता नहीं, राम कसम, राम–राम करना–अभिवादन, राम राम करके–बहुत कठिनाई से, राम राम हो जाना–मर जाना, रामशरण होना–विरक्त होना, राम कहानी–जीवन में हो चुकी घटनाओ का विस्तृत विवरण।

शोध प्रबंध का पुनरावलोकन या पूर्व में किए गए कार्य

छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य में राम विषयक पूर्व में किए गए कार्य का अवलोकन करने का प्रयास मैंने किया लेकिन इस विषय से संबंधित कोई शोध या पत्र अभी तक ज्ञात नहीं हुआ यद्यपि राम छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति के सभी विधाओं में रचे बसे है और छत्तीसगढ़ के जन–मानस में राम गणेश का पर्याय बन चुके है । मैं दावा तो नहीं करती कि शोध कार्य या लघुशोध के रुप में आप तक पहुँचाने का प्रयास संभवतः प्रथम है । मैं यह भी नहीं कहती कि राम के शोध में नवीनता है यह जरुर कह सकती हूँ कि विविधता वाले हमारे लोक संस्कृति में राम के सर्वसता को एक जगह पिरोने का मेरा यह कार्य प्रथम माना जाय ।

शोध कार्य का उद्देश्य

प्रस्तावित शोध कार्य का विषय **'राम'** को चुनने का उद्देश्य वर्तमान में राम के आदर्श, राम के चरित्र, राम के गुण, राम की मर्यादा को जन–जन तक पहुँचाया जाए और पहुँच चुका है तो पुनः पहुँचाकर जागृत करना है।

वर्तमान आधुनिकता में ढलता जा रहा भारतीय समाज राम के आदर्शों मर्यादाओं का अनुकरण कर ही हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार और समाज शिखर की ओर ले जा सकते हैं।

प्रस्तावित शोध–कार्य का महत्व

आज हम कम्प्युटर, मोबाईल और दूरदर्शन के युग में जी रहे है जहाँ हमारे लोकसंस्कृति और लोककला, लोकगीत तथा लोकगाथाएँ लुप्त होती जा रही है। हमें इस शोध–कार्य के माध्यम से फिर इस लोकसंस्कृति से जुड़ने का मौका मिलेगा और इसके लिए राम का नाम इस यात्रा का महत्वपूर्ण माध्यम है। इससे छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास भी प्रमाणित होगा। जिससे छत्तीसगढ़ को एक नई पहचान मिलेगी।

शोध प्रविधि

साहित्य अनुसंधान को प्रविधि के द्वारा अपने शोध को महत्वपूर्ण बनाने के लिए निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है। ग्रंथालय के ग्रंथो का, पत्र–पत्रिकाओं का, समाचार–पत्रों का, इंटरनेट, आदि का अध्ययन करके प्रस्तावित शोध–कार्य से जुड़े तथ्यों का संग्रहण किया गया है। इस शोध–प्रविधि के अंतर्गत द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण ही महत्वपूर्ण हो सकेगा।

अनुमानित निष्कर्ष

प्रस्तावित शोध–कार्य से छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास प्रमाणित होगा। श्रीराम का वनवास और उनका दंडकारण्य में वास में ऐसी सच्चाईयाँ है जिन पर निरंतर शोध करते रहने की आवश्यकता है। ऐसे समय में जब छत्तीसगढ़ एक राज्य के रुप में आकार ले चुका है, उसे अपने गौरव की पहचान करने की आवश्यकता है, जिससे छत्तीसगढ़ के लोग अपनी परंपरा में छिपे हुए सत्य और ऐतिहासिक तथ्यों को समझ सके और इससे स्थानीय जन में आत्मविश्वास और गौरव की भावना तो उत्पन्न होगी, देश और दुनिया भी छत्तीसगढ़ को सम्मान से देखेगी। छत्तीसगढ़ के इतिहास के पन्नों में दर्ज घटनाओं महानायकों का स्मरण इस क्षेत्र की नई पहचान के लिए आवश्यक है। इसके बाद आने वाली पीढ़ी एक नई नजर से अपने गौरवशाली इतिहास को देख, समझ और पढ़कर व्याख्यायित कर सकती है, जो उसका कर्त्तव्य भी है और अधिकार भी। यह तो सिर्फ एक शुरुआत है, अंत नहीं। छत्तीसगढ़ में राम की तलाश जारी रहनी चाहिए।

अध्यायीकरण

विषय – सूची

प्रथम अध्याय : छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का उद्‌भव एवं विकास

1.1 लोक साहित्य अर्थ एवं परिभाषा

1.2 छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में लोकगाथा

1.3 छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य मं लोकगीत

1.4 छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में नृत्य एवं नाट्‌य मंचन

1.5 छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में पहेली, लोकोक्ति एवं मुहावरा (हाना)

द्वितीय अध्याय : समप्राचीन साहित्य, आधुनिक साहित्य में अभिव्यक्त राम का स्वरूप

2.1 वाल्मीकीकृत रामायण

2.2 संस्कृत धार्मिक साहित्य में रामकथा

2.3 मध्यकालिन साहित्य में राम का स्वरूप

2.4 आधुनिक साहित्य में राम का स्वरूप

तृतीय अध्याय : छत्तीसगढ़ में राम का वास

3.1 राम वनवास एवं गमन पथ

3.2 छत्तीसगढ़ में रामवनवास का प्रथम पड़ाव–सरगुजा

3.3 राम का दंडकारण्य निवास

3.4 सिहावा के श्रृंगी ऋषि एवं आदिसप्त .ऋषियों के साथ राम

चतुर्थ अध्याय : छत्तीसगढ़ी लोगाथाओ में राम

4.1 सरवन कुमार की गाथा

4.2 फूलवासन की गाथा

4.3 शबरी की गाथा

4.4 छत्तीसगढ़ में गंगावरण की गाथा

4.5 कंवलापति लक्ष्मण की गाथा

4.6 रामायनी

पंचम अध्याय : छत्तीसगढ़ी लोकगीत में राम

5.1 जन्म से अंतिम समय के लोकगीतों में राम

5.2 पंडवानी में राम

5.3 सुवागीत में राम

5.4 छत्तीसगढ़ के विभिन्न लोकगीतो में राम

षष्ठम अध्याय : छत्तीसगढ़ी नृत्य एवं नाट्य मंचन में राम

6.1 छ.ग. के विभिन्न लोकनृत्यो में राम

6.2 छ.ग. में मंचित रामलीलाओं में राम (विभिन्न पर्व)

सप्तम अध्याय : छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य के पहेली, लोकोक्ति एवं मुहावरों (हाना) में राम

7.1 पहेलियों में राम

7.2 लोकोक्ति में राम

7.3 मुहावरों में राम

उपसंहार

परिशिष्ट

उपसंहार

मा निषाद प्रतिष्ठांत्वमगमः शाश्वतीसमाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।
वाल्मीकि रामायण

इस छंद में दया, करुणा एवं विरह है जो कवि वाल्मीकि के वाणी से क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक की हत्या निषाद के बाण से होने से उनकी वाणी से फूट पड़ी थी, उनके संबंध में उन्हें भी नहीं मालूम था कि यही साहित्य का आरंभ था। वे प्रश्न कर उठे कि उनके मुँह से अपने आप निकली ये पंक्तियाँ क्या थी? उन्हें उत्तर भी लोक वाणी में ही मिला था,

हे वाल्मीकि!–'यह अनुष्टुप छंद में उत्पन्न मानव भावनाओं की प्रथम अभिव्यक्ति है। यह वैदिक युग की समाप्ति और माानव के साहित्यिक युग का प्रारंभ है, अतः तुम इसी दिशा में रामकथा का गायन करो।' बाद में वाल्मीकि ने उसी छंद में छत्तीसगढ़ में इसी तुरतुरिया आश्रम में इस अमर कथा को प्रस्तुत किया था। कालक्रम में इन कथाओं का विस्तार अलग–अलग युगों में हुआ था। इन प्रसिद्ध कथाओं में देशकाल के अनुसार ऊपरी तौर पर बड़े फर्क दिखलाई पड़ते हैं, पर उनका मूल रुप हर एक के लिए एक ही है । बाद में विभिन्न लोक भाषाओं, लोकगीतों, लोककथाओं में इन कथाओं के विस्तार के पीछे भी उसी दैव सिद्धांत का उल्लेख मिलता है।

युग बदल गए पर आज भी छत्तीसगढ़ में अब तक राम नाम का प्रभाव है, आज भी निरंतर गतिमान है। शायद लोकमानस में उन जैसी प्रतिष्ठा किसी अन्य भारतीय चरित्र को प्राप्त नहीं है। वे राजपुत्र है, लेकिन उनका 'वनवासी राम का व्यक्तित्व लोक जहाँ में उन्हें आम आदमी के पास ले जाता है। अपने चौदह सालों के वनवास का उन्होंने जैसा रचनात्मकता से इस्तेमाल किया, वह प्रतिष्ठा और संघर्ष उनके रामराज्य पर भी भारी है। एक आदर्श राजा के साथ ही वे जीवन के हर रिश्तों में सहज, उदार और संवेदनशील दिखते है। उन्हें राजसता बाँधती नहीं। वे राजपाट छोड़कर निकल पड़ते हैं और यह निर्णय उन्हें जन–जन के बीच लोकप्रिय बनाता है। शायद इसलिए वे लोकजीवन में रच–बस गए हैं।

छत्तीसगढ़ के मानस में जो राम प्रतिठित है, वह स्वर्ग में रहने वाले अथवा मंदिर में स्थापित राम नहीं है। उनके राम अवधपति नहीं जगतपति है। वह आधुनिक बुद्धिजिवियों की तरह राम की ऐतिहासिकता के प्रमाण नहीं ढूँढ़ते । उनके राम त्रेतायुगीन भी नहीं है, वे तो सनातन पुरुष है। राम और रामकथा के विषय में छत्तीसगढ़ का बच्चा–बच्चा जानता है। प्राचीनकालीन छत्तीसगढ़ निरक्षर था। आज भी शिक्षा का प्रसार कम ही है, फिर भी राम के द्वारा स्थापित मर्यादा का प्रभाव यहाँ के जनमानस में व्यापक रुप से देखा जा सकता है। छत्तीसगढ़ के लोग राम और रामकथा से अभिभूत है, तभी तो लोकोक्तियों में लोककथाओं, लोकगाथाओं और लोकगीतों में राम ही राम रचे–बसे दिखाई देते है।

आधुनिक भौतिक प्रधान उपभोक्तावादी युग में जब सभी जगह नैतिक पतन के नये–नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं, तब भी छत्तीसगढ़ में राम, रामकथा और राम के आदर्श के प्रति आस्था सुदृढ़ रुप में विद्यमान है। जनता सखा भाव से ही सही श्रीराम की पूजा श्रद्धा

और विश्वास पूर्वक कर रही है। राम अपने मातुल प्रान्त छत्तीसगढ़ के जनमानस में रामराज्य के अवशेष अभी भी विद्यमान है।

परिशिष्ट

1. दिनकर, रामाधारी सिंह. संस्कृति के चार अध्याय. पटना : उदयाचल आर्य कुमार. 1962.
2. बुल्के, फादर कामिल (संपा.). राम–कथा. इलाहाबाद : हिन्दी परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय 2004.
3. तुलसीदास, हनुमान प्रसाद पोद्दार. (टीकाकार) श्रीरामचरितमानस. : गोरखपुरः गीताप्रेस (सं. 2064).
4. गोयल, कुंतल., मन्नू लाल यदु (संपा.). छत्तीसगढ़ में राम. रायपुर : छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2008.
5. बेहार, रामकुमार. मन्नू लाल यदु (संपा.). छत्तीसगढ़ में राम. रायपुर : छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2008.
6. झा, बसंत लाल. मन्नू लाल यदु (संपा.). छत्तीसगढ़ में राम. रायपुर : छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2008.
7. यदु, हेमू. मन्नू लाल यदु (संपा.). छत्तीसगढ़ में राम. रायपुर : छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2008.
8. शर्मा, श्रीराम. लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृति अध्ययन. दिल्ली : निर्मल पब्लिकेशन्स 2000.
9. सिन्हा, विजय कुमार. मन्नू लाल यदु (संपा.). छत्तीसगढ़ में राम. रायपुरः छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2008.
10. यदु, मन्नू लाल (संपा.). छत्तीसगढ़ की रामायण. रायपुर : छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2012.
11. पाठक, विनय कुमार. मन्नू लाल यदु (संपा.). राम और रामकाज. रायपुरः वैभव प्रकाशन 2005.
12. निर्मलकर, बलदाऊ प्रसाद. मन्नू लाल यदु (संपा). राम और रामकाज. रायपुर वैभव प्रकाशन 2005.
13. कुलदीप, जगदीश. मन्नू लाल यदु (संपा). राम और रामकाज. रायपुर वैभव प्रकाशन 2005.
14. अग्रवाल, अनूसिया. मन्नू लाल यदु (संपा.). छत्तीसगढ़ में राम. रायपुर : छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान 2012.

निर्देशक

डॉ. (श्रीमती) श्रीदेवी चौबे
प्राध्यापक विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
बी.सी.एस. शास. स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.)

शोधार्थी

ऋचा शुक्ला